

॥ गोस्वामी तुलसीदास कृत दोहावली ॥

॥ राम ॥

॥ श्री हनुमते नमः ॥

दो०

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुवर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिन तनु जानिके, सुमिरौ पवन-कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुवेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्ज और ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
संकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
विद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचन्द्र के काज सँवारे ॥
लाय संजीवन लखन जियाये । श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बडाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावै । अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिग्पाल जहाँ ते । कबि कोविद कहि संके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मंत्र विभीषण माना । लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही । जलधि लाँघि गये अचरज नाही ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रच्छक काहु को डरना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनो लोक हाँक ते काँपै ॥
भूत पिसाच निकट नहि आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हैर सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट तें हनुमान छुडावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ॥

और मनोरथ जो कोई लावै । सोइ अमित जीवन फल पावै ॥
चारो जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्व सुख कररई ॥
संकट कटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाई । कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥
जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महासुख होई ॥
जो यह पढ़े हनुमान चालीसा । होय सिद्धि सास्त्री गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

दो०

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

॥ इति ॥

सियावर रामचन्द्र की जय । पवनसुत हनुमान की जय ॥
उमापति महादेव की जय । बोलो भाइ सब संतन्ह की जय ॥

॥ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥

दोहावली

ध्यान

राम बाम दिसि जानकी लखन दाहिनी ओर ।
ध्यान सकल कल्यानमय सुरतरु तुलसी तोर ॥
सीता लखन समेत प्रभु सोहत तुलसीदास ।
हरषत सुर बरषत सुमन सगुन सुमंगल बास ॥
पंचबटी बट बिटप तर सीता लखन समेत ।
सोहत तुलसीदास प्रभु सकल सुमंगल देत ॥

राम-नाम-जपकी महिमा

चित्रकूट सब दिन बसत प्रभु सिय लखन समेत ।

राम नाम जप जापकहि तुलसी अभिमत देत ॥
 पय अहार फल खाइ जपु राम नाम षट मास ।
 सकल सुमंगल सिद्धि सब करतल तुलसीदास ॥
 राम नाम मनीदीप धरु जीह देहरी द्वार ।
 तुलसी भीतर बाहरेहुँ जौ चाहसि उजियार ॥
 हिय निर्गुन नयनहि सगुन रसना राम सुनाम ।
 मनहुँ पुरट संपुट लसत तुलसी ललित ललाम ॥
 सगुन ध्यान रुचि सरस नहिं निर्गुन मन ते दूरि ।
 तुलसी सुमिरहु रामको नाम सजीवन मूरि ॥
 एक छनु एक मुकुटमनि सब बरननि पर जोउ ।
 तुलसी रघुबर नाम के बरन विराजत दोउ ॥
 नाम राम को अंक है सब साधन हैं सून ।
 अंक गएँ कछु हाथ नहिं अंक रहें दस गून ॥
 नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु ।
 जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु ॥
 राम नाम जपि जीहुँ जन भए सुकृत सुखसालि ।
 तुलसी इहाँ जो आलसी गयो आजु की कालि ॥
 नाम गरीबनिवाज को राज देत जन जानि ।
 तुलसी मन परिहरत नहिं धुर बिनिआ की बानि ॥
 कासीं बिधि बसि तनु तजें हठि तनु तजें प्रयाग ।
 तुलसी जो फल सो सुलभ राम नाम अनुराग ॥
 मीठो अरु कठवति भरो रैताई अरु छैम ।
 स्वारथ परमारथ सुलभ राम नाम के प्रेम ॥
 राम नाम सुमिरत सुजस भाजन भए कुजाति ।
 कुतरुक सुरपुर राजमग लहत भुवन विस्थाति ॥
 स्वारथ सुख सपनेहुँ अगम परमारथ न प्रबेस ।
 राम नाम सुमिरत मिठहि तुलसी कठिन कलेस ॥
 मोर मोर सब कहूँ कहसि तू को कहु निज नाम ।
 के चुप साधहि सुनि समुझि कै तुलसी जपु राम ।
 हम लखि लखहि हमार लखि हम हमार के बीच ।
 तुलसी अलखहि का लखहि राम नाम जप नीच ॥
 राम नाम अवलंब बिनु परमारथ की आस ।
 बरषत बारिद बूँद गहि चाहत चढन अकास ॥
 तुलसी हठि हठि कहत नित चित सुनि हित करि मानि ।
 लाभ राम सुमिरन बडो बड़ी बिसरें हानि ॥
 बिगरी जनम अनेक की सुधरै अबही आजु ।
 होहि राम को नाम जपु तुलसी तजि कुसमाजु ॥

प्रीति प्रतीति सो राम राम जपु राम ।
 तुलसी तेरो है भलो आदि मध्य परिनाम ॥
 दंपति रस रसना दसन परिजन बदन सुगेह ।
 तुलसी हर हित बरन सिसु संपति सहज सनेह ॥
 बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास ।
 रामनाम बर बरन जुग सावन भाद्र भाद्र मास ॥
 राम नाम नर केसरी कनककसिपु कलिकाल ।
 जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल ॥

राम नाम कलि कामतरु राम भगति सुरधेनु ।
 सकल सुमंगल मूल जग गुरुपद पंकर रेनु ॥
 राम नाम कलि कामतरु सकल सुमंगल कंद ।
 सुमिरत करतल सिद्धि सब पग पग परमानंद ॥
 जथा भूमि सब बीजमय नखत निवास अकास ।
 राम नाम सब धरममय जानत तुलसीदास ॥
 सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन ।
 नाम सुप्रेम पियूष हृद तिन्हुँ किए मन मीन ॥

ब्रह्म राम तें नामु बड बर दायक बर दानि ।
 राम चरित सत कोटि महँ लिय महेस जिय जानि ॥
 सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ ।
 नाम उधारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ ॥
 राम नाम पर नाम तें प्रीति प्रतीति भरोस ।
 सो तुलसी सुमिरत सकल सगुन सुमंगल कोस ॥
 लंक बिमीषन राज कपि पति मारुति खग मीच ।
 लही राम सों नाम रति चाहत तुलसी नीच ॥
 हरन अमंगल अघ अखिल करन सकल कल्यान ।
 रामनाम नित कहत हर गावत बेद पुरान ॥

तुलसी प्रीति प्रतीति सों राम नाम जप जाग ।
 किएँ होइ बिधि दाहिनो देइ अभागेहि भाग ॥
 जल थल नभ गति अमित अति अग जग जीव अनेक ।
 तुलसी तो से दीन कहूँ राम नाम गति एक ॥
 राम भरोसो राम बल राम नाम विस्वास ।
 सुमिरत सुभ मंगल कुसल माँगत तुलसीदास ॥
 राम नाम रति राम गति राम नाम विस्वास ।
 सुमिरत सुभ मंगल कुसल दुहुँ दिसि तुलसीदास ॥

रामप्रेमके बिना सब व्यर्थ है

रसना साँपिनि बदन बिल जे न जपहिं हरिनाम ।
 तुलसी प्रेम न राम सों ताहि बिधाता बाम ॥
 हिय फाटहुँ फूटहुँ नयन जरउ सो तन केहि काम ।
 द्रवहिं स्त्रवहिं पुलकइ नहीं तुलसी सुमिरत राम ॥
 रामहि सुमिरत रन भिरत देत परत गुरु पाँय ।
 तुलसी जिन्हहि न पुलक तनु ते जग जीवत जायै ॥

सोरठा

हृदय सो कुलिस समान जो न द्रवइ हरिगुन सुनत ।
 कर न राम गुन गान जीह सो दादुर जीह सम ॥
 स्त्रवै न सलिल सनेहु तुलसी सुनि रघुबीर जस ।
 ते नयना जनि देहु राम करहु बरु आँधरो ॥
 रहें न जल भरि पूरि राम सुजस सुनि रावरो ।
 तिन आँखिन में धूरि भरि भरि मूठी मेलिये ॥

प्रार्थना

बारक सुमिरत तोहि होहि तिन्हहि सम्मुख सुखद ।
क्यों न संभारहि मोहि दया सिंधु दसरथ के ॥

रामकी और रामप्रेमकी महिमा

साहिव होत सरोष सेवक को अपराध सुनि ।
अपने देखे दोष सपनेहु राम न उर धरे ॥

दोहा

तुलसी रामहि आपु तें सेवक की रुचि मीठि ।
सीतापति से साहिवहि कैसे दीजै पीठि ॥
तुलसी जाके होयगी अंतर बाहिर दीठि ।
सो कि कृपालुहि देइगो केवटपालहि पीठि ॥
प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किए आपु समान ।
तुलसी कहु न राम से साहिव सील निधान ॥

उद्घोधन

रे मन सब सों निरस है सरस राम सों होहि ।
भलो सिखावन देत है निसि दिन तुलसी तोहि ॥
हरे चरहिं तापहि बरे फरें पसारहिं हाथ ।
तुलसी स्वारथ मीत सब परमारथ रघुनाथ ॥
स्वारथ सीता राम सों परमारथ सिय राम ।
तुलसी तेरो दूसरे द्वार कहा कहु काम ॥
स्वारथ परमारथ सकल सुलभ एक ही ओर ।
द्वार दूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर ॥
तुलसी स्वारथ राम हित परमारथ रघुबीर ।
सेवक जाके लखन से पवनपूत रनधीर ॥
ज्यों जग बैरी मीन को आपु सहित बिनु बारि ।
त्यों तुलसी रघुबीर बिनु गति आपनी विचारि ॥

तुलसीदासजीकी अभिलाषा

राम प्रेम बिनु दूबरो राम प्रेमहीं पीन ।
रघुबर कबहुँक करहुगे तुलसिहि ज्यों जल मीन ॥

रामप्रेमकी महत्ता

राम सनेही राम गति राम चरन रति जाहि ।
तुलसी फल जग जनम को दियो बिधाता ताहि ॥
आपु आपने तें अधिक जेहि प्रिय सीताराम ।
तेहि के पग की पानहीं तुलसी तनु को चाम ॥

स्वारथ परमारथ रहित सीता राम सनेहँ ।
तुलसी सो फल चारि को फल हमार मत एहँ ॥
जे जन रुखे बिषय रस चिकने राम सनेहँ ।
तुलसी ते प्रिय राम को कानन बसहि कि गेहँ ॥
जथा लाभ संतोष सुख रघुबर चरन सनेह ।
तुलसी जो मन खूँ य सम कानन बसहुँ कि गेह ॥
तुलसी जाँ पै राम सों नाहिन सहज सनेह ।
मूँड मुड़ायो बादिहीं भाँड़ भयो तजि गेह ॥

रामविमुखताका कुफल

तुलसी श्रीरघुबीर तजि करै भरोसो और ।
सुख संपति की का चली नरकहुँ नाहीं ठौर ॥
तुलसी परिहरि हरि हरहि पाँवर पूजहिं भूत ।
अंत फजीहत होहिंगे गनिका के से पूत ॥
सेये सीता राम नहिं भजे न संकर गौरि ।
जनम गँवायो बादिहीं परत पराई पौरि ॥
तुलसी हरि अपमान तें होइ अकाज समाज ।
राज करत रज मिलि गए सदल सकुल कुरुराज ॥
तुलसी रामहि परिहरें निपट हानि सुन ओझा ।
सुरसरि गत सोई सलिल सुरा सरिस गंगोझा ॥
राम दूरि माया बढ़ति घटति जानि मन माँह ।
भूरि होति रबि दूरि लखि सिर पर पगतर छाँह ॥
साहिव सीतानाथ सों जब घटिहै अनुराग ।
तुलसी तबहीं भालतें भभरि भागिहैं भाग ॥
करिहौ कोसलनाथ तजि जबहिं दूसरी आस ।
जहाँ तहाँ दुख पाइहौं तबहीं तुलसीदास ॥
विंधि न ईंधन पाइए सागर जुरै न नीर ।
परै उपास कुबेर घर जो विपच्छ रघुबीरो ॥
बरसा को गोबर भयो को चहै को करै प्रीति ।
तुलसी तू अनुभवहि अब राम बिमुख की रीति ॥
सबहिं समरथहि सुखद प्रिय अच्छुम प्रिय हितकारि ।
कबहुँ न काहुहि राम प्रिय तुलसी कहा विचारि ॥
तुलसी उद्यम करम जुग जब जेहि राम सुडीठि ।
होइ सुफल सोइ ताहि सब सनमुख प्रभु तन पीठि ॥
राम कामतरु परिहरत सेवत कलि तरु ढूँठ ।
स्वारथ परमारथ चहत सकल मनोरथ झूँठ ॥

कल्याणका सुगम उपाय

निज दूषन गुन राम के समझें तुलसीदास ।
होइ भलो कलिकाल हुँ उभय लोक अनयास ॥
कै तोहि लागहिं राम प्रिय कै तू प्रभु प्रिय होहि ।
दुइ में रुचै जो सुगम सो कीबे तुलसी तोहि ॥
तुलसी दुइ महुँ एक ही खेल छाँड़ि छल खेलु ।
कै करु ममता राम सों के ममता परहेलु ॥

श्रीरामजीकी प्राप्तिका सुगम उपाय

निगम अगम साहेब सुगम राम साँचिली चाह ।
अंबु असन अवलोकिअत सुलभ सबै जग माँह ॥
सनमुख आवत पथिक ज्यों दिएँ दाहिनो बाम ।
तैसोइ होत सु आप को त्यों ही तुलसी राम ॥

रामप्रेमके लिये वैराग्यकी आवश्यकता

राम प्रेम पथ पेस्थिए दिएँ विषय तन पीठि ।
तुलसी केंचुरि परिहरें होत साँफू दीठि ॥
तुलसी जौ तौं विषय की मुधा माधुरी मीठि ।
तौ लौं सुधा सहस्र सम राम भगति सुठि सीठि ॥

शरणागतिकी महिमा

जैसो तैसो रावरो केवल कोसलपाल ।
तौ तुलसी को है भलो तिहुँ लोक तिहुँ काल ॥
है तुलसी कें एक गुन अवगुन निधि कहै लोग ।
भलो भरोसो रावरो राम रीझिबे जोग ॥

भक्तिका स्वरूप

प्रीति राम सों नीति पथ चलिय राग रिस जीति ।
तुलसी संतन के मते इहै भगति की रीति ॥

कलियुगसे कौन नहीं छला जाता

सत्य बचन मानस बिमल कपट रहित करतूति ।
तुलसी रघुबर सेवकहि सकै न कलिजुग धूति ॥
तुलसी सुखी जो राम सों दुखी सो निज करतूति ।
करम बचन मन ठीक जेहिं तेहि न सकै कलि धूति ॥

गोस्वामीजीकी प्रेम-कामना

नातो नाते राम कें राम सनेहैं सनेहु ।
तुलसी माँगत जोरि कर जनम जनम सिव देहु ॥
सब साधनको एक फल जेहिं जान्यो सो जान ।
ज्यों त्यों मन मंदिर बसहिं राम धरें धनु बान ॥
जौं जगदीस तौ अति भलो जौं महीस तौ भाग ।
तुलसी चाहत जनम भरि राम चरन अनुराग ॥
परौ नरक फल चारि सिसु मीच डाकिनी खाउ ।
तुलसी राम सनेह को जो फल सो जरि जाउ ॥

रामभक्तके लक्षण

हित सों हित, रति राम सों, रिपु सों बैर विहाउ ।
उदासीन सब सों सरल तुलसी सहज सुभाउ ॥
तुलसी ममता राम सों समता सब संसार ।
राग न रोष न दोष दुख दास भए भव पार ॥

उद्घोषन

रामहि डरु करु राम सों ममता प्रीति प्रतीति ।
तुलसी निरुपधि राम को भएँ हारेहुँ जीति ॥
तुलसी राम कृपालु सों कहि सुनाउ गुन दोष ।
होय द्वारी दीनता परम पीन संतोष ॥
सुमिरन सेवा राम सों साहब सों पहिचानि ।
ऐसेहु लाभ न ललक जो तुलसी नित हित हानि ॥
जानें जानन जोडिए बिनु जाने को जान ।
तुलसी यह सुनि समुझि हियाँ आनु धरें धनु बान ॥
करमठ कठमलिया कहैं ज्यानी ज्यान बिहीन ।
तुलसी त्रिपथ बिहाइ गो राम दुआरें दीन ॥
बाधक सब सब के भए साधक भए न कोइ ।
तुलसी राम कृपालु तें भलो होइ सो होइ ॥

शिव और रामकी एकता

संकर प्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास ।
ते नर करहिं कलप भरि धोर नरक महुँ बास ॥
बिलग बिलग सुख संग दुख जनम मरन सोइ रीति ।
रहिअत राखे राम के गए ते उचित अनीति ॥

रामप्रेमकी सर्वोत्कृष्टता

जाँय कहब करतूति बिनु जायें जोग बिन छेम ।
तुलसी जायें उपाय सब बिना राम पद प्रेम ॥
लोग मगन सब जोगहीं जोग जाँय बिनु छेम ।
त्यों तुलसीके भावगत राम प्रेम बिनु नेम ॥

श्रीरामकी कृपा

राम निकाई रावरी है सबही को नीक ।
जौं यह साँची है सदा तौ नीको तुलसीक ॥
तुलसी राम जो आदर्यो खोटो खरो खरोइ ।
दीपक काजर सिर धर्यो धर्यो सुधर्यो धरोइ ॥
तनु बिचित्र कायर बचन अहि अहार मन धोर ।
तुलसी हरि भए पच्छधर ताते कह सब मोर ॥
लहड न फूटी कौड़िहु को चाहै केहि काज ।
सो तुलसी महँगो कियो राम गरीब निवाज ॥
घर घर माँगे टूक पुनि भूपति पूजे पाय ।

जे तुलसी तब राम बिनु ते अब राम सहाय ॥
 तुलसी राम सुदीठि तें निबल होत बलवान ।
 बैर बालि सुग्रीव कें कहा कियो हनुमान ॥
 तुलसी रामहु तें अधिक राम भगत जियैं जान ।
 रिनिया राजा राम भे धनिक भए हनुमान ॥
 कियो सुसेवक धरम कपि प्रभु कृतग्य जियैं जानि ।
 जोरि हाथ ठाढ़े भए बरदायक बरदानि ॥
 भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप ।
 किए चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरुप ॥
 ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार ।
 सोइ सच्चिदानन्दघन कर नर चरित उदार ॥
 हिरन्याच्छ्र भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान ।
 जेहिं मारे सोइ अवतरेउ कृपासिधु भगवान ॥
 सुद्ध सच्चिदानन्दमय कंद भानुकुल केतु ।
 चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु ॥

भगवान् की बाललीला

बाल बिभूषन बसन बर धूरि धूसरित अंग ।
 बालकेलि रघुबर करत बाल बंधु सब संग ॥
 अनुदिन अवध बधावने नित नव मंगल मोद ।
 मुदित मातु पितु लोग लखि रघुबर बाल बिनोद ॥
 राज अजिर राजत रुचिर कोसलपालक बाल ।
 जानु पानि चर चरित बर सगुन सुमंगल माल ॥
 नाम ललित लीला ललित ललित रूप रघुनाथ ।
 ललित बसन भूषन ललित ललित अनुज सिसु साथ ॥
 राम भरत लछिमन ललित सत्रु समन सुभ नाम ।
 सुमिरत दसरथ सुवन सब पूजहिं सब मन काम ॥
 बालक कोसलपाल के सेवकपाल कृपाल ।
 तुलसी मन मानस बसत मंगल मंजु मराल ॥
 भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल ।
 करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जगजाल ॥
 निज इच्छा प्रभु अवतरइ सुर महि गो द्विज लागि ।
 सगुन उपासक संग तहैं रहहिं मोच्छ सब त्यागि ॥

प्रार्थना

परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम ।
 प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम ॥

भजनकी महिमा

बारि मर्थै धृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल ।
 बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल ॥
 हरि माया कृत दोष गुन बिनु हरि भजन न जाहिं ।
 भजिअ राम सब काम तजि अस बिचारि मन माहिं ॥

जो चेतन कहैं जड़ करइ जड़हि करइ चैतन्य ।
 अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य ॥
 श्रीरघुबीर प्रताप ते सिधु तरे पाषान ।
 ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन ॥
 लव निमेष परमानु जुग बरस कलप सर चंड ।
 भजसि न मन तेहि राम कहैं कालु जासु कोदंड ॥
 तब लगि कुसल न जीव कहैं सपनेहुँ मन बिश्राम ।
 जब लगि भजत न राम कहैं सोकधाम तजि काम ॥
 बिनु सतसंग न हरिकथा तेहि बिनु मोह न भाग ।
 मोह गएँ बिनु रामपद होइ न दृढ अनुराग ॥
 बिनु विस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु ।
 राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न ल बिश्रामु ॥

सोरठा

अस बिचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल ।
 भजहु राम रघुबीर करुनाकर सुंदर सुखद ॥
 भाव बस्य भगवान सुख निधान करुना भवन ।
 तजि ममता मद मान भजिअ सदा सीता रवन ॥
 कहहि बिमलमति संत बेद पुरान बिचारि अस ।
 द्रवहिं जानकी कंत तब छ्लै संसार दुख ॥
 बिनु गुरु होइ कि ग्यान ग्यान कि होइ विराग बिनु ।
 गावहिं बेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु ॥

दोहा

रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निर्बान ।
 ग्यानवंत अपि सो नर पसु बिनु पूँछ बिषान ॥
 जरउ सो संपति सदन सुखु सुहद मातु पितु भाइ ।
 सनमुख होत जो रामपद करइ न सहस सहाइ ॥
 सेइ साधु गुरु समुद्धि सिखि राम भगति धिरताइ ।
 लरिकाई को पैरिबो तुलसी बिसरि न जाइ ॥

रामसेवककी महिमा

सबइ कहावत राम के सबहि राम की आस ।
 राम कहहिं जेहि आपनो तेहि भजु तुलसीदास ॥
 जेहि सरीर रति राम सों सोइ आदरहिं सुजान ।
 रुद्रदेह तजि नेहबस बानर भे हनुमान ॥
 जानि राम सेवा सरस समुद्धि करब अनुमान ।
 पुरुषा ते सेवक भए हर ते भे हनुमान ॥
 तुलसी रघुबर सेवकहि खल डाटत मन माखि ।
 बाजराज के बालकहि लवा दिखावत आँखि ॥
 रावन रिपुके दास तें कायर करहिं कुचालि ।
 खर दूषन मारीच ज्यों नीच जाहिंगे कालि ॥
 पुन्य पाप जस अजस के भावी भाजन भूरि ।

संकट तुलसीदास को राम करहिंगे दूरि ॥
 खेलत बालक व्याल सँग मेलत पावक हाथ ।
 तुलसी सिसु पितु मातु ज्यों राखत सिय रघुनाथ ॥
 तुलसी दिन भल साहु कहूँ भली चोर कहूँ राति ।
 निसि बासर ता कहूँ भलो मानै राम इताति ॥

राम महिमा

तुलसी जाने सुनि समुद्दि कृपासिंधु रघुराज ।
 महँगे मनि कंचन किए सौंधे जग जल नाज ॥

रामभजनकी महिमा

सेवा सील सनेह बस करि परिहरि प्रिय लोग ।
 तुलसी ते सब राम सों सुखद सँजोग बियोग ॥
 चारि चहत मानस अगम चनक चारि को लाहु ।
 चारि परिहरें चारि को दानि चारि चख चाहु ॥

रामप्रेमकी प्राप्ति सुगम उपाय

सूधे मन सूधे बचन सूधी सब करतूति ।
 तुलसी सूधी सकल विधि रघुवर प्रेम प्रसूति ॥

रामप्राप्तिमें बाधक

वेष विसद बोलनि मधुर मन कटु करम मलीन ।
 तुलसी राम न पाइए भाँ विषय जल मीन ॥
 बचन वेष तें जो बनइ सो बिगरइ परिनाम ।
 तुलसी मन तें जो बनइ बनी बनाई राम ॥

राम अनुकूलतामें ही कल्याण है

नीच मीचु लै जाइ जो राम रजायसु पाइ ।
 तौ तुलसी तेरो भलो न तु अनभलो अधाइ ॥

श्रीरामकी शरणागतवत्सलता

जाति हीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्हि असि नारि ।
 महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥
 बंधु बधू रत कहि कियो बचन निश्तर बालि ।
 तुलसी प्रभु सुग्रीव की चितइ न कद्दू कुचालि ।
 बालि बली बलसालि दलि सखा कीन्ह कपिराज ।
 तुलसी राम कृपालु को विरद गरीब निवाज ॥
 कहा विभीषन लै मिल्यो कहा बिगार्यो बालि ।
 तुलसी प्रभु सरनागतहि सब दिन आए पालि ॥
 तुलसी कोसलपाल सो को सरनागत पाल ।

भज्यो विभीषन बंधु भय भंज्यो दारिद काल ॥
 कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि ।
 चित्त खगेस राम कर समुद्दि परइ कहु काहि ॥
 बलकल भूषन फल असन तृन सज्या हुम प्रीति ।
 तिन्ह समयन लंका दई यह रघुवर की रीति ॥
 जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ ।
 सोइ संपदा विभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ॥
 अविचल राज विभीषनहि दीन्ह राम रघुराज ।
 अजहुँ विराजत लंक पर तुलसी सहित समाज ॥
 कहा विभीषन लै मिल्यो कहा दियो रघुनाथ ।
 तुलसी यह जाने बिना मूढ़ मीजिहैं हाथ ॥
 बैरि बंधु निसिचर अधम तज्यो न भरें कलंक ।
 झूठें अघ सिय परिहरी तुलसी साँइ संसंक ॥
 तेहि समाज कियो कठिन पन जेहिं तौल्यो कैलास ।
 तुलसी प्रभु महिमा कहौं सेवक को बिस्वास ॥
 सभा सभासद निरसि पट पकरि उठायो हाथ ।
 तुलसी कियो इगारहों बसन बेस जदुनाथ ॥
 त्राहि तीनि कह्यो द्वौपदी तुलसी राज समाज ।
 प्रथम बढ़े पट बिय बिकल चहत चकित निज काज ॥
 सुख जीवन सब कोउ चहत सुख जीवन हरि हाथ ।
 तुलसी दाता मागनेउ देखिअत अबुध अनाथ ॥
 कृपन देइ पाइअ परो बिनु साधें सिधि होइ ।
 सीतापति सनमुख समुद्दि जौ कीजै सुभ सोइ ॥
 दंडक बन पावन करन चरन सरोज प्रभाउ ।
 ऊसर जामहिं खल तरहिं होइ रंक ते राउ ॥
 बिनहिं रितु तरुवर फरत सिला द्रवहि जल जोर ।
 राम लखन सिय करि कृपा जब चितवत जेहि ओर ॥
 सिला सुतिय भइ गिरि तरे मृतक जिए जग जान ।
 राम अनुग्रह सगुन सुभ सुलभ सकल कल्यान ॥
 सिला साप मोचन चरन सुमिरहु तुलसीदास ।
 तजहु सोच संकट मिटिहिं पूजहि मनकी आस ॥
 मुए जिआए भालु कपि अवध बिप्रको पूत ।
 सुमिरहु तुलसी ताहि तू जाको मारुति दूत ॥

प्रार्थना

काल करम गुन दोर जग जीव तिहारे हाथ ।
 तुलसी रघुवर रावरो जानु जानकीनाथ ॥
 रोग निकर तनु जरठपनु तुलसी संग कुलोग ।
 राम कृपा लै पालिए दीन पालिबे जोग ॥
 मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर ।
 अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भव भीर ॥
 भव भुअंग तुलसी नकुल डसत ग्यान हरि लेत ।
 चित्रकूट एक औषधी चितवत होत सचेत ॥
 हौहु कहावत सबु कहत राम सहत उपहास ।
 साहिव सीतानाथ सो सेवक तुलसीदास ॥

रामराज्यकी महिमा

राम राज राजत सकल धरम निरत नर नारि ।
राग न रोष न दोष दुख सुलभ पदारथ चारि ॥
राम राज संतोष सुख घर बन सकल सुपास ।
तरु सुरतरु सुरधेनु महि अभिमत भोग बिलास ॥
खेती बनि बिद्या बनिज सेवा सिलिप सुकाज ।
तुलसी सुरतरु सरिस सब सुफल राम कें राज ॥
दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज ।
जीतहु मनहिं सुनिअ अस रामचंद्र कें राज ॥
कोपें सोच न पोच कर करिअ निहोर न काज ।
तुलसी परमिति प्रीति की रीति राम कें राज ॥

श्रीरामकी दयालुता

मुकुर निरखि मुख राम भू गनत गुनहि दै दोष ।
तुलसी से सठ सेवकन्हि लखि जनि परहिं सरोष ॥

श्रीरामकी धर्मधुरन्धरता

सहसनाम मुनि भनित सुनि तुलसी बल्लभ नाम ।
सकुचित हियँ हँसि निरखि सिय धरम धुरंधर राम ॥

श्रीसीताजीका अलौकिक प्रेम

गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग पानि ।
मन बिहँसे रघुबंसमनि प्रीति अलौकिक जानि ॥

श्रीरामकी कीर्ति

तुलसी बिलसत नखत निसि सरद सुधाकर साथ ।
मुकुता झालरि झालक जनु राम सुजसु सिसु हाथ ॥
रघुपति कीरति कामिनी क्यों कहै तुलसीदासु ।
सरद अकास प्रकास ससि चारु चिबुक तिल जासु ॥
प्रभु गुन गन भूषन वसन विसद विसेष सुबेस ।
राम सुकीरति कामिनी तुलसी करतब केस ॥
राम चरित राकेस कर सरिस सुखद सब काहु ।
सज्जन कुमुद चकोर चित हित विसेषि बड़ लाहु ॥
रघुबर कीरति सज्जननि सीतल खलनि सुताति ।
ज्यों चकोर चय चक्कवनि तुलसी चाँदनि राति ॥

रामकथाकी महिमा

राम कथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु ।
तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु ॥

स्याम सुरभि पय विसद अति गुनद करहिं सब पान ।
गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान ॥
हरि हर जस सुर नर गिरहुँ बरनहिं सुकबि समाज ।
हाँड़ी हाटक घटित चरु राँधे स्वाद सुनाज ॥

राममहिमाकी अज्ञेयता

तिल पर राखेउ सकल जग बिदित बिलोकत लोग ।
तुलसी महिमा राम की कौन जानिबे जोग ॥

श्रीरामजीके स्वरूपकी अलौकिकता

सोरठा

राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर ।
अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह ॥

ईश्वर-महिमा

दोहा

माया जीव सुभाव गुन काल करम महदादि ।
ईस अंक तें बढत सब ईस अंक बिनु बादि ॥

श्रीरामजीकी भक्तवत्सलता

हित उदास रघुबर बिरह बिकल सकल नर नारि ।
भरत लखन सिय गति समुझि प्रभु चख सदा सुबारि ॥

सीता,लक्ष्मण और भरतके रामप्रेमकी अलौकिकता

सीय सुमित्रा सुबन गति भरत सनेह सुभाउ ।
कहिबे को सारद सरस जनिबे को रघुराउ ॥
जानि राम न कहि सके भरत लखन सिय प्रीति ।
सो सुनि गुनि तुलसी कहूत हठ सठता की रीति ॥
सब विधि समरथ सकल कह सहि साँसति दिन राति ।
भलो निवाहेउ सुनि समुझि स्वामिधर्म सब भाँति ॥

भरत-महिमा

भरतहि होइ न राजमदु बिधि हरिहर पद पाइ ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ ॥
संपति चकई भरत चक मुनि आयस खेलवार ।
तेहि निसि आश्रम पिंजराँ राखे भा भिनुसार ॥
सधन चोर मग मुदित मन धनी गही ज्यों फेंट ।
त्यों सुग्रीव बिभीषनहिं भई भरतकी भेंट ॥

राम सराहे भरत उठि मिले राम सम जानि ।
तदपि विभीषण कीसपति तुलसी गरत गलानि ॥
भरत स्याम तन राम सम सब गुन रूप निधान ।
सेवक सुखदायक सुलभ सुमिरत सब कल्यान ॥

लक्ष्मणमहिमा

ललित लखन मूरति मधुर सुमिरहु सहित सनेह ।
सुख संपति कीरति विजय सगुन सुमंगल गेह ॥

शत्रुघ्नमहिमा

नाम सत्रुसूदन सुभग सुषमा सील निकेत ।
सेवत सुमिरत सुलभ सुख सकल सुमंगल देत ॥

कौसल्यामहिमा

कौसल्या कल्यानमइ मूरति करत प्रनाम ।
सगुन सुमंगल काज सुभ कृपा करहिं सियाराम ॥

सुमित्रामहिमा

सुमिरि सुमित्रा नाम जग जे तिय लेहिं सनेम ।
सुअन लखन रिपुदवन से पावहिं पति पद प्रेम ॥

सीतामहिमा

सीताचरन प्रनाम करि सुमिरि सुनाम सुनेम ।
होहिं तीय पतिदेवता प्राननाथ प्रिय प्रेम ॥

रामचरित्रकी पवित्रता

तुलसी केवल कामतरु रामचरित आराम ।
कलितरु कपि निसिचर कहत हमहिं किए विधि बाम ॥

कैकेयीकी कुटिलता

मातु सकल सानुज भरत गुरु पुर लोग सुभाउ ।
देखत देख न कैकइहि लंकापति कपिराउ ॥
सहज सरल रघुबर बचन कुमति कुटिल करि जान ।
चलइ जोक जल बक्रगति जद्यपि सलिलु समान ॥

दशरथमहिमा

दसरथ नाम सुकामतरु फलइ सकलो कल्यान ।
धरनि धाम धन धरम सुत सदगुन रूप निधान ॥

तुलसी जान्यो दसरथहिं धरमु न सत्य समान ।
रामु तजे जेहि लागि बिनु राम परिहरे प्रान ॥
राम बिरहँ दसरथ मरन मुनि मन अगम सुमीचु ।
तुलसी मंगल मरन तरु सुचि सनेह जल सीचु ॥

सोरथा

जीवन मरन सुनाम जैसें दसरथ राय को ।
जियत खिलाए राम राम बिरहँ तनु परिहरेत ॥

जटायुका भाग्य

दोहा

प्रभुहि बिलोकत गोद गत सिय हित धायल नीचु ।
तुलसी पाई गीधपति मुकुति मनोहर मीचु ॥
विरत करम रत भगत मुनि सिद्ध ऊँच अरु नीचु ।
तुलसी सकल सिहात सुनि गीधराज की मीचु ॥
मुए मरत मरिहैं सकल धरी पहरके बीचु ।
लही न काहँ आजु लौं गीधराज की मीचु ॥
मुए मुकुत जीवत मुकुत मुकुत मुकुत हूँ बीचु ।
तुलसी सबही तें अधिक गीधराज की मीचु ॥
रघुबर बिकल विहंग लखि सो बिलोकि दोउ बीर ।
सिय सुधि कहि सियल राम कहि देह तजी मति धीर ॥
दसरथ तें दसगुन भगति सहित तासु करि काजु ।
सोचत बंधु समेत प्रभु कृपासिंधु रघुराजु ॥

रामकृपाकी महत्ता

केवट निसिचर बिहग मृग किए साधु सनमानि ।
तुलसी रघुबर की कृपा सकल सुमंगल खानि ॥

हनुमत्स्मरणकी महत्ता

मंजुल मंगल मोदमय मूरति मारुत पूत ।
सकल सिद्धि कर कमल तल सुमिरत रघुबर दूत ॥
धीर बीर रघुबीर प्रिय सुमिरि समीर कुमारु ।
अगम सुगम सब काज करु करतल सिद्धि बिचारु ॥
सुख मुद मंगल कुमुद बिधु सुगुन सरोरुह भानु ।
करहु काज सब सिद्धि सुभ आनि हिए हनुमानु ॥
सकल काज सुभ समउ भल सगुन सुमंगल जानु ।
कीरति विजय विभूति भलि हिय हनुमानहि आनु ॥
सुमिरत सब सुख संपदा मुद मंगल दातार ॥

बाहुपीड़ाकी शान्तिके लिये प्रार्थना

तुलसी तनु सर सुख जलज भुज रुज गज बरजोर ।
दलत दयानिधि देखिए कपि केसरी किसोर ॥
भुज तरु कोटर रोग अहि बरबस कियो प्रबेस ।
बिहगराज बाहन तुरत काढिअ मिटै कलेस ॥
बाहु बिटप सुख बिहँग थलु लगी कुपीर कुआगि ।
राम कृपा जल सीचिए बेगि दीन हित लागि ॥

काशीमहिमा

सोरठा

मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान स्वानि अघ हानि कर ।
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न ॥

शंकरमहिमा

जरत सकल सुर बृंद विषम गरल जेहिं पान किय ।
तेहिं न भजसि मन मंद को कृपालु संकर सरिस ॥

शंकरजीसे प्रार्थना

दोहा

बासर ढासनि के ढका रजनी चहुँ दिसि चोर ।
संकर निज पुर राखिए चितै सुलोचन कोर ॥
अपनी बीसीं आपुहीं पुरिहिं लगाए हाथ ।
केहि विधि बिनती विस्व की करै विस्व के नाथ ॥

भगवल्लीलाकी दुर्ज्जयता

और करै अपराधु कोउ और पाव फल भोगु ।
अति विचित्र भगवंत गति को जग जानै जोगु ॥

प्रेममें प्रपञ्च बाधक है

प्रेम सरीर प्रपञ्च रुज उपजी अधिक उपाधि ।
तुलसी भली सुबैदई बेगि बाँधिए ब्याधि ॥

अभिमान ही बन्धनका मूल है

हम हमार आचार बड़ भूरि भार धरि सीस ।
हठि सठ परबस परत जिमि कीर कोस कृमि कीस ॥

जीव और दर्पणके प्रतिबिम्बकी समानता

केहिं मग प्रविसति जाति केहिं कहु दरपनमें छाहै ।
तुलसी ज्यों जग जीव गति करि जीव के नाहै ॥

भगवन्मायाकी दुर्ज्जयता

सुखसागर सुख नींद बस सपने सब करतार ।
माया मायानाथ की को जग जाननिहार ॥

जीवकी तीन दशाएँ

जीव सीव सम सुख सयन सपने कछु करतूति ।
जागत दीन मलीन सोइ बिकल विषाद विभूति ॥

सृष्टि स्वप्नवत् है

सपने होइ भिस्सारि नृपु रंकु नाकपति होइ ।
जागें लाभु न हानि कछु तिमि प्रपञ्च जियँ जोइ ॥

हमारी मृत्यु प्रतिक्षण हो रही है

तुलसी देखत अनुभवत सुनत न समझत नीच ।
चपरि चपेटे देत नित केस गहें कर मीच ॥

कालकी करतूत

करम खरी कर मोह थल अंक चराचर जाल ।
हनत गुनत गनि गुनि हनत जगत ज्यौतिषी काल ॥

इन्द्रियोंकी सार्थकता

कहिवे कहै रसना रची सुनिवे कहै किये कान ।
धरिवे कहै चित हित सहित परमारथहि सुजान ॥

सगुणके बिना निर्गुणका निरूपण असम्भव है

ग्यान कहै अग्यान बिनु तम बिनु कहै प्रकास ।
निरगुन कहै जो सगुन बिनु सो गुरु तुलसीदास ॥

निर्गुणकी अपेक्षा सगुण अधिक प्रामाणिक है

अंक अगुन आखर सगुन समुद्दिअ उभय प्रकार ।
खोएँ राखें आपु भल तुलसी चारु बिचार ॥

विषयासक्तिका नाश हुए बिना ज्ञान अधूरा है

परमारथ पहिचानि मति लसति विषय लपटानि ।

निकसि चिता तें अधजरित मानहुँ सती परानि ॥
विषयासक्त साधुकी अपेक्षा वैराग्यवान् गृहस्थ अच्छा है
सीस उधारन किन कहेउ बरजि रहे प्रिय लोग ।
घरहीं सती कहावती जरती नाह वियोग ॥

साधुके लिये पूर्ण त्यागकी आवश्यकता

खरिया खरी कपूर सब उचित न पिय तिय त्याग ।
कै खरिया मोहि मेलि कै बिमल बिबेक बिराग ॥
भगवतप्रेममें आसक्ति बाधक है, गृहस्थाश्रम नहीं
घर कीन्हें घर जात है घर छाँड़ि घर जाइ ।
तुलसी घर बन बीचहीं राम प्रेम पुर छाइ ॥

संतोषपूर्वक घरमें रहना उत्तम है

दिएँ पीठि पाछें लगै सनमुख होत पराइ ।
तुलसी संपति छाँह ज्यों लखि दिन बैठि गँवाइ ॥

विषयों की आशा ही दुःख का मूल है

तुलसी अझूत देवता आसा देवी नाम ।
सेएँ सोक समर्पई बिमुख भएँ अभिराम ॥

मोह-महिमा

सोई सेवर तेइ सुवा सेवत सदा बसंत ।
तुलसी महिमा मोह की सुनत सराहत संत ॥

विषय-सुखकी हेयता

करत न समुझत झूठ गुन सुनत होत मति रंक ।
पारद प्रगट प्रपञ्चमय सिद्धिउ नाउँ कलंक ॥

लोभकी प्रबलता

ज्यानी तापस सूर कबि कोबिद गुन आगार ।
केहि कै लोभ बिडंबना कीन्हि न एहिं संसार ॥

धन और ऐश्वर्यके मद तथा कामकी व्यापकता

श्रीमद बक न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि ।
मृगलोचनि के नैन सर को अस लाग न जाहि ॥

मायाकी फौज

व्यापि रहेउ संसार महुँ माया कटक प्रचंड ।

सेनापति कामादि भट दंभ कपट पाषंड ॥

काम,क्रोध,लोभकी प्रबलता

तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ ।
मुनि विग्यान धाम मन करहिं निमिष महुँ छोभ ॥

काम,क्रोध,लोभके सहायक

लोभ कें इच्छा दंभ बल काम के केवल नारि ।
क्रोध के परुष बचन बल मुनिवर कहिं विचारि ॥

मोहकी सेना

काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह के धारि ।
तिन्ह महुँ अति दारुन दुखद मायारुपी नारि ॥

अग्नि,समुद्र,प्रबल स्त्री और कालकी समानता

काह न पावक जारि सक का न समुद्र समाइ ।
का न करै अबला प्रबल केहि जग कालु न साइ ॥

स्त्री झगड़े और मृत्युकी जड़ है

जनमपत्रिका बरति कै देखहु मनहिं विचारि ।
दारुन बैरी मीचु के बीच बिराजति नारि ॥

उद्घोधन

दीपसिखा सम जुबति तन मन जनि होसि पतंग ।
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग ॥

गृहासक्ति श्रीरघुनाथजीके स्वरूपके ज्ञानमें बाधक है

काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुखरूप ।
ते किमि जानहिं रघुपतिहि मूढ़ परे भव कूप ॥

काम-क्रोधादि एक-एक अनर्थकारक है फिर सबकी

तो बात ही क्या है

ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस तेहि पुनि बीच्छी मार ।
तेहि पिआइअ बारुनी कहहु काह उपचार ॥

किसके मनको शान्ति नहीं मिलती ?

ताहि कि संपति सगुन सुभ सपनेहुँ मन बिश्राम ।
भूत द्रोह रत मोहबस राम बिमुख रति काम ॥

ज्ञानमार्गकी कठिनता

कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक ।
होइ घुनाच्छर न्याय जौं पुनि प्रत्यूह अनेक ॥

भगवङ्गजनके अतिरिक्त और सब प्रयत्न व्यर्थ हैं

खल प्रबोध जग सोध मन को निरोध कुल सोध ।
करहिं ते फोटक पचि मरहिं सपनेहुँ सुख न सुबोध ॥

संतोषकी महिमा

सोरठा

कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु ।
चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचि पचि मरिअ ॥

मायाकी प्रबलता और उसके तरनेका उपाय

सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल ।
अस बिचारि मन माहिं भजिअ महामाया पतिहि ॥

गोस्वामीजीकी अनन्यता

दोहा

एक भरोसो एक बल एक आस बिस्वास ।
एक राम धन स्याम हित चातक तुलसीदास ॥

प्रेमकी अनन्यताके लिये चातकका उदाहरण

जौं धन बरसै समय सिर जौं भरि जनम उदास ।
तुलसी या चित चातकहि तऊ तिहारी आस ॥

चातक तुलसी के मतें स्वातिहुँ पिए न पानि ।
प्रेम तृषा बाढ़ति भली घटें घटैगी आनि ॥
रटत रटत रसना लटी तृषा सूखि गे अंग ।
तुलसी चातक प्रेम को नित नूतन रुचि रंग ॥
चढ़त न चातक चित कबहुँ प्रिय पयोद के दोष ।
तुलसी प्रेम पयोधि की ताते नाप न जोख ॥
बरषि परुष पाहन पयद पंख करौ ठुक टूक ।
तुलसी परी न चाहिए चतुर चातकहि चूक ॥
उपल बरसि गरजत तरजि डारत कुलिस कठोर ।

चितव कि चातक मेघ तजि कबहुँ दूसरी ओर ॥
पवि पाहन दामिनि गरज झरि झकोर खरि खीझि ।
रोष न प्रीतम दोष लखि तुलसी रागहि रीझि ॥
मान राखिबो माँगिबो पिय सों नित नव नेहु ।
तुलसी तीनित तब फबैं जौ चातक मत लेहु ॥
तुलसी चातक ही फबैं मान राखिबो प्रेम ।
बक बुंद लखि स्वातिहु निदरि निबाहत नेम ॥
तुलसी चातक माँगनो एक एक धन दानि ।
देत जो भू भाजन भरत लेत जो धूटक पानि ॥
तीनि लोक तिहुँ काल जस चातक ही के माथ ।
तुलसी जासु न दीनता सुनी दूसरे नाथ ॥
प्रीति पपीहा पयद की प्रगट नई पहिचानि ।
जाचक जगत कनाउडो कियो कनौड़ा दानि ॥
नहिं जाचत नहिं संग्रही सीस नाइ नहिं लेइ ।
ऐसे मानी मागनेहि को बारिद बिन देइ ॥
को को न ज्यायो जगत में जीवन दायक दानि ।
भयो कनौड़ो जाचकहि पयद प्रेम पहिचानि ॥
साधन साँसति सब सहत सबहि सुखद फल लाहु ।
तुलसी चातक जलद की रीझि बूझि बुध काहु ॥
चातक जीवन दायकहि जीवन समयं सुरीति ।
तुलसी अलख न लखि परै चातक प्रीति प्रतीति ॥
जीव चराचर जहुँ लगे हैं सब को हित मेह ॥
तुलसी चातक मन बस्यो धन सों सहज सनेह ॥
डोलत बिपुल बिहंग बन पिअत पोखरनि बारि ।
सुजस धवल चातक नवल तुही भुवन दस चारि ॥
सुख मीठे मानस मलिन कोकिल मोर चकोर ।
सुजस धवल चातक नवल रह्यो भुवन भरि तोर ॥
बास बेस बोलनि चलनि मानस मंजु मराल ।
तुलसी चातक प्रेम की कीरति बिसद बिसाल ॥
प्रेम न परखिअ परुषपन पयद सिखावन एह ।
जग कह चातक पातकी ऊसर बरसै मेह ॥
होइ न चातक पातकी जीवन दानि न मूढ़ ।
तुलसी गति प्रहलाद की समुझि प्रेम पथ गूढ़ ॥
गरज आपनी सबन को गरज करत उर आनि ।
तुलसी चातक चतुर भो जाचक जानि सुदानि ॥
चरग चंगु गत चातकहि नेम प्रेम की पीर ।
तुलसी परखस हाड़ पर परिहैं पुहुमी नीर ॥
बध्यो बधिक पर्यों पुन्य जल उलटि उठाई चोंच ।
तुलसी चातक प्रेमपट मरतहुँ लगी न खोंच ॥
अंड फोरि कियो चेटुवा तुष पर्यों नीर निहारि ।
गहि चंगुल चातक चतुर डार्यो बाहिर बारि ॥
तुलसी चातक देत सिख सुतहि बारहीं बार ।
तात न तर्पन कीजिए बिना बारिधर धार ॥

सोरठा

जिअत न नाई नारि चातक घन तजि दूसरहि ।
सुरसरिहूँ को बारि मरत न माँगेउ अरध जल ॥
सुनु रे तुलसीदास प्यास पपीहहि प्रेम की ।
परिहरि चारिउ मास जौ अँचवै जल स्वाति को ॥
जाचै बारह मास पिए पपीहा स्वाति जल ।
जान्यो तुलसीदास जोगवत नेही नेह मन ॥

दोहा

तुलसी के मत चातकहि केवल प्रेम पिआस ।
पिअत स्वाति जल जान जग जाँचत बारह मास ॥
आलबाल मुकुताहलनि हिय सनेह तरु मूल ।
होइ हेतु चित चातकहि स्वाति सलिलु अनुकूल ॥
उष्म काल अरु देह खिन मन पंथी तन ऊख ।
चातक बतियाँ न रुचीं अन जल सीचे रुख ॥
अन जल सीचे रुख की छाया तें बरु धाम ।
तुलसी चातक बहुत हैं यह प्रबीन को काम ॥
एक अंग जो सनेहता निसि दिन चातक नेह ।
तुलसी जासों हित लगै वहि अहार वहि देह ॥

एकाङ्गी अनुरागके अन्य उदाहरण

बिबि रसना तनु स्याम है बंक चलनि विष खानि ।
तुलसी जस श्रवननि सुन्यो सीस समरप्यो आनि ॥

मृगका उदाहरण

आपु व्याध को रूप धरि कुहौ कुरंगहि राग ।
तुलसी जो मृग मन मूरै परै प्रेम पट दाग ॥

सर्पका उदाहरण

तुलसी मनि निज दुति फनिहि व्याधिहि देउ दिखाइ ।
विछ्वरत होइ नव आँधरो ताते प्रेम न जाइ ॥

कमलका उदाहरण

जरत तुहिन लखि बनज बन रबि दै पीठि पराउ ।
उदय बिकस अथवत सकुच मिटै न सहज सुभाउ ॥

मछलीका उदाहरण

देउ आपनें हाथ जल मीनहि माहुर घोरि ।
तुलसी जिए जो बारि बिनु तौ तु देहि कबि खोरि ॥
मकर उरग दादुर कमठ जल जीवन जल गेह ।
तुलसी एके मीन को है साँचिलो सनेह ॥

मधूरशिखा बूटीका उदाहरण

तुलसी मिटे न मरि मिटेहुँ सौँचो सहज सनेह ।
मोरसिखा बिनु मूरिहुँ पलुहत गरजत मेह ॥
सुलभ प्रीति प्रीतम सबै कहत करत सब कोइ ।
तुलसी मीन पुनीत ते त्रिभुवन बडो न कोइ ॥

अनन्यताकी महिमा

तुलसी जप तप नेम ब्रत सब सबहीं तें होइ ।
लहै बड़ाई देवता इष्टदेव जब होइ ॥

गाढ़े दिनका मित्र ही मित्र है

कुदिन हितू सो हित सुदिन हित अनहित किन होइ ।
ससि छबि हर रवि सदन तउ मित्र कहत सब कोइ ॥

बराबरीका स्नेह दुःखदायक होता है

कै लघुकै बड़ मीत भल सम सनेह दुख सोइ ।
तुलसी ज्यों धृत मधु सरिस मिलें महाविष होइ ॥

मित्रतामें छल बाधक है

मान्य मीत सों सुख चहैं सो न छुए छल छाहैं ।
ससि त्रिसंकु कैकेइ गति लखि तुलसी मन माहैं ॥
कहिअ कठिन कृत कोमलहुँ हित हठि होइ सहाइ ।
पलक पानि पर ओड़िअत समुन्नि कुधाइ सुधाइ ॥

वैर और प्रेम अंधे होते हैं

तुलसी वैर सनेह दोउ रहित बिलोचन चारि ।
सुरा सेवरा आदरहिं निंदहिं सुरसरि बारि ॥

दानी और याचकका स्वभाव

रुचै मागनेहि मागिबो तुलसी दानिहि दानु ।
आलस अनख न आचरज प्रेम पिहानी जानु ॥

प्रेम और वैर ही अनुकूलता और प्रतिकूलतामें हेतु हैं

अमिअ गारि गारेउ गरल गारि कीन्ह करतार ।
प्रेम वैर की जननि जुग जानहिं बुध न गवाँर ॥

स्मरण और प्रिय भाषण ही प्रेमकी निशानी है

सदा न जे सुमिरत रहहिं मिलि न कहहिं प्रिय बैन ।
ते पै तिन्ह के जाहिं घर जिन्ह के हिएँ न नैन ॥

स्वार्थ ही अच्छाई-बुराईका मानदण्ड है

हित पुनीत सब स्वारथहिं अरि असुद्ध बिनु चाड़ ।
निज मुख मानिक सम दसन भूमि परे ते हाड़ ॥

संसारमें प्रेममार्गके अधिकारी बिरले ही हैं

माखी काक उलूक बक दादुर से भए लोग ।
भले ते सुक पिक मोरसे कोउ न प्रेम पथ जोग ॥

कलियुगमें कपटकी प्रधानता

हृदयैं कपट बर बेष धरि बचन कहहिं गढ़ि छोलि ।
अब के लोग मयूर ज्यों क्यों मिलिए मन सोलि ॥

कपट अन्ततक नहीं निभता

चरन चोंच लोचन रँगौ चलौ मराली चाल ।
छोर नीर बिवरन समय बक उघरत तेहि काल ॥

कुटिल मनुष्य अपनी कुटिलताको नहीं छोड़ सकता

मिलै जो सरलहि सरल है कुटिल न सहज बिहाड़ ।
सो सहेतु ज्यों बक गति व्याल न बिलहिं समाइ ॥
कृसधन सखहि न देव दुख मुएहुँ न मागब नीच ।
तुलसी सज्जन की रहनि पावकल पानी बीच ॥
संग सरल कुटिलहि भएँ हरि हर करहिं निबाहु ।
ग्रह गनती गनि चतुर विधि कियो उदर बिनु राहु ॥

स्वभावकी प्रधानता

नीच निचाई नहिं तजइ सज्जनहुँ के संग ।
तुलसी चंदन बिटप बसि बिनु विष भए न भुअंग ॥
भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाईहि नीचु ।
सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु ॥
मिथ्या माहुर सज्जनहि खलहि गरल सम साँच ।
तुलसी छुअत पराइ ज्यों पारद पावक आँच ॥

सत्संग और असत्संगका परिणामगत भेद

संत संग अपवर्ग कर कामी भव कर पंथ ।
कहहिं संत कवि कोबिद श्रुति पुरान सदग्रंथ ॥

सुकृत न सुकृती परिहरइ कपट न कपटी नीच ।
मरत सिखावन देइ चले गीधराज मारीच ॥

सज्जन और दुर्जनका भेद

सुजन सुतरु बन ऊख सम खल टंकिका रुखान ।
परहित अनहित लागि सब साँसति सहर समान ॥
पिअहि सुमन रस अलिल बिटप काटि कोल फल खात ।
तुलसी तरुजीवी जुगल सुमति कुमति की बात ॥

अवसरकी प्रधानता

अवसर कौड़ी जो चुकै बहुरि दिएँ का लाख ।
दुइज न चंदा देखिएँ उदौ कहा भरि पाख ॥

भलाई करना बिरले ही जानते हैं

ज्यान अनभले को सबहि भले भलेहू काउ ।
सींग सूँड रद लूम नख करत जीव जड़ घाउ ॥

संसारमें हित करनेवाले कम हैं

तुलसी जग जीवन अहित कतहुँ कोउ हित जानि ।
सोषक भानु कुसानु महि पवन एक घन दानि ॥
सुनिअ सुधा देखिअहिं गरल सब करतूति कराल ।
जहाँ तहाँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल ॥
जलचर थलचर गगनचर देव दनुज नर नाग ।
उत्तम मध्यम अधम खल दस गुन बढत बिभाग ॥
बलि मिस देखे देवता कर मिस मानव देव ।
मुए मार सुबिचार हत स्वारथ साधन एव ॥
सुजन कहत भल पोच पथ पापि न परखइ भेद ।
करमनास सुरसरित मिस विधि निषेध बद बेद ॥

वस्तुही प्रधान है, आधार नहीं

मनि भाजन मधु पारई पूरन अमी निहारि ।
का छुँड़िअ का संग्रहिअ कहहु बिबेक विचारि ॥

प्रीति और वैरकी तीन श्रेणियाँ

उत्तम मध्यम नीच गति पाहन सिकता पानि ।
प्रीति परिच्छा तिहुन की बैर बितिक्रम जानि ॥

जिसे सज्जन ग्रहण करते हैं, उसे दुर्जन त्याग देते हैं

पुन्य प्रीति पति प्रापतिउ परमारथ पथ पाँच ।

लहहिं सुजन परिहरहिं खल सुनहू सिखावन साँच ॥

प्रकृतिके अनुसार व्यवहारका भेद भी आवश्यक हैं

नीच निरादरहीं सुखद आदर सुखद बिसाल ।
कदरी बदरी बिटप गति पेखहू पनस रसाल ॥

अपना आचरण सभी को अच्छा लगता है

तुलसी अपनो आचरन भलो न लागत कासु ।
तेहि न बसात जो खात नित लहसुनहू को बासु ॥

भाग्यवान् कौन है ?

बुध सो बिबेकी बिमलमति जिन्ह के रोष न राग ।
सुहृद सराहत साधु जेहि तुलसी ताको भाग ॥

साधुजन किसकी सराहना करते हैं

आपु आपु कहँ सब भलो अपने कहँ कोइ कोइ ।
तुलसी सब कहँ जो भलो सुजन सराहिअ सोइ ॥

संगकी महिमा

तुलसी भलो सुसंग तें पोच कुसंगति सोइ ।
नाउ किनरी तीर असि लोह बिलोकहु लोइ ॥
गुरु संगति गुरु होइ सो लघु संगति लघु नाम ।
चार पदारथ में गनै नरक द्वारहू काम ॥
तुलसी गुरु लघुता लहत लघु संगति परिनाम ।
देवी देव पुकारिअत नीच नारि नर नाम ॥
तुलसी किएँ कुसंग थिति होहिं दाहिने बाम ।
कहि सुनि सकुचिअ सूम खल गत हरि संकर नाम ॥
बसि कुसंग चह सुजनता ताकी आस निरास ।
तीरथहू को नाम भो गया मगह के पास ॥
राम कृपाँ तुलसी सुलभ गंग सुसंग समान ।
जो जल परै जो जन मिलै कीजै आपु समान ॥
ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग ।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जल लखहिं सुलच्छन लोग ।
जनम जोग में जानिअत जग बिचित्र गति देखि ।
तुलसी आखर अंक रस रंग बिभेद बिसेषि ॥
आखर जोरि बिचार करु सुमति अंक लिखि लेखु ।
जोग कुजोग सुजोग मय जग गति समुझि बिसेषु ॥

मार्ग-भेदसे फल-भेद

करु बिचार चलु सुपथ भल आदि मध्य परिनाम ।

उलटि जपें 'जारा मरा' सूर्धे'राजा राम' ॥

भलेके भला ही हो, यह नियम नहीं है

होइ भले के अनभलो होइ दानि के सूम ।
होइ कपूत सपूत के ज्यों पावक में धूम ॥

विवेककी आवश्यकता

जड़ चेतन गुन दोष मय विस्व कीन्ह करतार ।
संत हंक गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार ॥

सोरठा

पाट कीट तें होइ तेहि तें पाटबर रुचिर ।
कृमि पालइ सबु कोइ परम अपावन प्रान सम ॥

दोहा

जो जो जेहिं जेहिं रल मगन तहँ सो मुदित मन मानि ।
रसगुन दोष बिचारिबो रसिक रीति पहिचानि ॥
सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद विधि कीन्ह ।
ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह ॥

कभी-कभी भलेको बुराई भी मिल जाती है

लोक वेदहू लौं दगो नाम भले को पोच ।
धर्मराज जम गाज पवि कहत सकोच न सोच ॥

सज्जन और दुर्जनकी परीक्षाके भिन्न-भिन्न प्रकार

बिरुचि परखिए सुजन जन राखि परखिए मंद ।
बड़वानल सोषत उदधि हरष बढ़ावत चंद ॥

नीच पुरुषकी नीचता

प्रभु सनमुख भएँ नीच नर होत निपट बिकराल ।
रविरुख लखि दरपन फटिक उगिलत ज्वालाजाल ॥

सज्जनकी सज्जनता

प्रभु समीप गत सुजन जन होत सुखद सुविचार ।
लवन जलधि जीवन जलद बरषत सुधा सुबारि ॥
नीच निरावहिं निरस तरु तुलसी सीचहिं ऊख ।
पोषत पयद समान सब बिष पियूष के रुख ॥
बरषि बिस्व हरषित करत हरत ताप अघ प्यास ।

तुलसी दोष न जलद को जो जल जरै जवास ॥
अमर दानि जाचक मरहिं मरि मरि फिरि लेहिं ।
तुलसी जाचक पातकी दातहि दूषन देहिं ॥

नीचनिन्दा

लखि गयंद लै चलत भजि स्वान सुखानो हाड़ ।
गज गुन मोल अहार बल महिमा जान कि राड़ ॥

सज्जनमहिमा

कै निदरहुँ कै आदरहुँ सिंघहि स्वान सिआर ।
हरष विषाद न केसरिहि कुंजर गंजनिहार ॥

दुर्जनोका स्वभाव

ठाढ़ो द्वार न दै सकै तुलसी जे नर नीच ।
निंदहि बलिल हरिचंद को का कियो करन दधीच ॥

नीचकी निन्दासे उत्तम पुरुषोंका कुछ नहीं घटता

ईस सीस बिलसत बिमल तुलसी तरल तरंग ।
स्वान सरावग के कहें लघुता लहै न गंग ॥
तुलसी देवल देव को लागे लाख करोरि ।
काक अभागे हगि भर्यो महिमा भई कि थोरि ॥

गुणोंका ही मूल्य है, दूसरोंके आदर-अनादरका नहीं

निज गुन घटत न नाग नग परखि परिहरत कोल ।
तुलसी प्रभु भूषन किए गुंजा बढ़े न मोल ॥

श्रेष्ठ पुरुषोंकी महिमाको कोई नहीं पा सकता

राकापति शोड़स उअहिं तारा गन समुदाइ ।
सकल गिरिन्ह दब लाइ बिनु रबि राति न जाइ ॥

दुष्ट पुरुषोंद्वारा की हुई निन्दा-स्तुतिका कोई मूल्य नहीं है

भलो कहिं बिनु जानेहुँ बिनु जानें अपबाद ।
ते नर गादुर जानि जियँ करिय न हरष विषाद ॥

डाह करनेवालोंका कभी कल्याण नहीं होता

पर सुख संपति देखि सुनि जरहिं जे जड़ बिनु आगि ।
तुलसी तिन के भागते चलै भलाई भागि ॥

दूसरोंकी निन्दा करनेवालोंका मुहँ काला होता है
तुलसी जे कीरति चहहिं पर की कीरति खोइ ।
तिनके मुहँ मसि लागिहै मिटहि न मरिहै धोइ ॥

मिथ्या अभिमानका दुष्परिणाम

तन गुन धन महिमा धरम तेहि बिनु जेहि अभिमान ।
तुलसी जिअत बिडंबना परिनामहु गत जान ॥

नीचा बनकर रहना ही श्रेष्ठ है

सासु ससुर गुरु मातु पितु प्रभु भयो चहै सब कोइ ।
होनी दूजी ओर को सुजन सराहिअ सोइ ॥

सज्जन स्वाभाविक ही पूजनीय होते हैं

सठ सहि साँसति पति लहत सुजन कलेस न कायँ ।
गढ़ि गुढ़ि पाहन पूजिए गंडकि सिला सुभायँ ॥

भूप-दरबारकी निन्दा

बड़े बिबुध दरबार तें भूमि भूप दरबार ।
जापक पूजत पेखिअत सहत निरादर भार ॥

छल-कपट सर्वत्र वर्जित है

बिनु प्रपंच छल भीख भलि लहिअ न दिएँ कलेस ।
बावन बलि सों छल कियो दियो उचित उपदेस ॥
भलो भले सों छल किएँ जनम कनौड़ो होइ ।
श्रीपति सिर तुलसी लसति बलि बावन गति सोइ ॥
बिबुध काज बावन बलिहि छलो भलो जिय जानि ।
प्रभुता तजि बस भे तदपि मन की गड़ न गलानि ॥

जगत् में सब सीधोंको तंग करते हैं

सरल बक गति पंच ग्रह चपरि न चितवत काहु ।
तुलसी सूधे सूर ससि समय बिडंबित राहु ॥

दुष्ट-निन्दा

खल उपकार बिकार फल तुलसी जान जहान ।
मेढुक मर्कट बनिक बक कथा सत्य उपखान ॥
तुलसी खल बानी मधुर सुनि समुद्दिअ हियँ हेरि ।
राम राज बाधक भई मूढ़ मंथरा चेरि ॥
जोंक सूधि मन कुटिल गति खल बिपरीत बिचारु ।

अनहित सोनित सोष सो सो हित सोषनिहारु ॥
नीच गुड़ि ज्यों जानिबो सुनि लखि तुलसीदास ।
ढीलि दिएँ गिरि परत महि खैंचत चढ़त अकास ॥
भरदर बरसत कोस सत बचै जे बूँद बराइ ।
तुलसी तेउ खल बचन कर हए गए न पराइ ॥
पेरत कोल्हू मेलि तिल तिली सनेही जानि ।
देखि प्रीति की रीति यह अब देखिबी रिसानि ॥
सहबासी काचो गिलहिं पुरजन पाक प्रबीन ।
कालछेप केहि मिलि करहिं तुलसी खग मृग मीन ॥
जासु भरोसें सोइऐ राखि गोद में सीस ।
तुलसी तासु कुचाल तें रखवारो जगदीस ॥
मार खोज लै सौंह करि करि मत लाज न ब्रास ।
मुए नीच ते मीच बिनु जे इन कें बिस्वास ॥
परद्रोही परदार रत परधन पर अपबाद ।
ते नर पावंर पापमय देह धरें मनुजाद ॥

कपटीको पहचानना बड़ा कठिन है

बचन बेष क्यों जानिए मन मलीन नर नारि ।
सूपनखा मृग पूतना दसमुख प्रमुख बिचारि ॥

कपटी से सदा डरना चाहिये

हँसनि मिलनि बोलनि मधुर कटु करतब मन माँह ।
छुवत जो सकुचइ सुमति सो तुलसी तिन्ह कि छाह ॥

कपट ही दुष्टाका स्वरूप है

कपट सार सूची सहस बाँधि बचन परबास ।
कियो दुराउ चहौ चातुरीं सो सठ तुलसीदास ॥

कपटी कभी सुख नहीं पाता

बचन बिचार अचार तन मन करतब छुल छूति ।
तुलसी क्यों सुख पाइऐ अंतरजामिहि धूति ॥
सारदूल को स्वाँग करि कूकर की करतूति ।
तुलसी तापर चाहिए कीरति बिजय बिभूति ॥

पाप ही दुःखका मूल है

बड़े पाप बाढ़े किए छोटे किए लजात ।
तुलसी ता पर सुख चहत बिधि सों बहुत रिसात ॥

अविवेक ही दुःखका मूल है

देस काल करता करम बचन बिचार बिहीन ।

ते सुरतरु तर दारिदी सुरसरि तीर मलीन ॥
साहस ही कै कोप बस किएँ कठिन परिपाक ।
सठ संकट भाजन भए हठि कुजाति कपि काक ॥
राज करत बिनु काजहीं करहिं कुचालि कुसाजि ।
तुलसी ते दसकंध ज्यों जड़हैं सहित समाज ॥
राज करत बिनु काजहीं ठटहिं जे कूर कुठाट ।
तुलसी ते कुरुराज ज्यों जड़है बारह बाट ॥

विपरीत बुद्धि बिनाशका लक्षण है

सभा सुयोधन की सकुनि सुमति सराहन जोग ।
द्रोन बिदुर भीषम हरिहि कहहिं प्रपंची लोग ॥
पांडु सुअन की सदसि ते नीको रिपु हित जानि ।
हरि हर सम सब मानिअत मोह ज्यान की बानि ॥
हित पर बढ़ि बिरोध जब अनहित पर अनुराग ।
राम बिमुख बिधि बाम गति सगुन अधाइ अभाग ॥
सहज सुहृद गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि ।
सो पछिताइ अधाइ उर अवसि होइ हित हानि ॥

जोशमें आकर अनधिकार कार्य करनेवाला पछताता है

भरुहाए नट भाँट के चपरि चढ़े संग्राम ।
कै वै भाजे आइहै के बाँधे परिनाम ॥

समयपर कष्ट सह लेना हितकर होता है

लोक रीति फूटी सहहिं आँजी सहइ न कोइ ।
तुलसी जो आँजी सहइ सो आँधरो न होइ ॥

भगवान् सबके रक्षक है

भागें भल ओड़ेहुँ भलो भलो न धालें धाउ ।
तुलसी सब के सीस पर रखवारो रघुराउ ॥

लड़ना सर्वथा त्याज्य है

सुमति बिचारहिं परिहरहिं दल सुमनहुँ संग्राम ।
सकुल गए तनु बिनु भए सासी जादौ काम ॥
ऊलह न जानब छोट करि कलह कठिन परिनाम ।
लगति अग्नि लघु नीच गृह जरत धनिक धन धाम ॥

क्षमाका महत्व

छमा रोष के दोष गुन सुनि मनु मानहिं सीख ।
अविचल श्रीपति हरि भए भूसुर लहै न भीख ॥
कौरव पांडव जानिए क्रोध छमा के सीम ।

पाँचहि मारि न सौ सके सयौ सँघारे भीम ॥

क्रोधकी अपेक्षा प्रेमके द्वारा वश करना ही जीत है

बोल न मोटे मारिए मोटी रोटी मारु ।
जीति सहस सम हारिबो जीतें हारि निहारु ॥
जो परि पायँ मनाइए तासों रुठि बिचारि ।
तुलसी तहाँ न जीतिए जहाँ जीतेहूँ हारि ॥
जूँझे ते भल बूँझिबो भली जीति ते हार ।
डहकें तें डहकाइबो भलो जो करिअ बिचार ॥
जा रिपु सो हारेहूँ हँसी जिते पाप परितापु ।
तासों रारि निवारिए समयँ सँभारिअ आपु ॥
जो मधु मरै न मारिए माहुर देइ सो काउ ।
जग जिति हारे परसुधर हारि जिते रघुराउ ॥
बैर मूल हर हित बचन प्रेम मूल उपकार ।
दो हा सुभ संदोह सो तुलसी किएँ बिचार ॥
रोष न रसना खोलिए बरु खोलिअ तरवारि ।
सुनत मधुर परिनाम हित बोलिअ बचन बिचार ॥
मधुर बचन कटु बोलिबो बिनु श्रम भाग अभाग ।
कुहु कुहु कलकंठ रव का का कररत काग ॥
पेट न फूलत बिनु कहें कहत न लागइ ढेर ।
सुमति बिचारे बोलिए समुझि कुफेर सुफेर ॥

बीतराग पुरुषोंकी शरण ही जगत् के जंजालसे बचनेका उपाय है
छिद्यो न तरुनि कटाच्छ सर करेउ न कठिन सनेहु ।
तुलसी तिन की देह को जगत कवच करि लेहु ॥

शूरवीर करनी करते हैं कहते नहीं

सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु ।
बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु ॥

अभिमान के बचन कहना अच्छा नहीं

बचन कहे अभिमान के पारथ पेस्वत सेतु ।
प्रभु तिय लूटत नीच भर जय न मीचु तैहिं हेतु ॥

दीनोंकी रक्षा करनेवाला सदा विजयी होता है

राम लखन विजई भए बनहुँ गरीब निवाज ।
मुखर बालि रावन गए घरहीं सहित समाज ॥

नीतिका पालन करनेवालेके सभी सहायक बन जाते हैं

खग मृग मीत पुनीत किय बनहुँ राम नयपाल ।

कुमति बालि दसकंठ घर सुहद बंधु कियो काल ॥

सराहनेयोग्य कौन है

लख अधानो भूख ज्यों लख जीतिमें हारि ।
तुलसी सुमति सराहिए मग पग धरइ बिचारि ॥

अवसर चूक जानेसे बड़ी हानि होती है

लाभ समय को पालिबो हानि समय की चूक ।
सदा बिचारहिं चारमति सुदिन कुदिन दिन दूक ॥

समयका महत्व

सिंधु तरन कपि गिरि हरन काज साँड़ हित दोउ ।
तुलसी समयहिं सब बड़ो बूझत कहुँ कोउ कोउ ॥

तुलसी मीठी अमी तें मागी मिलै जो मीच ।
सुधा सुधाकर समय बिनु काललकूट तें नीच ॥

विपत्तिकालके मित्र कौन है ?

तुलसी असमय के सखा धीरज धरम बिबेक ।
साहित साहस सत्यब्रत राम भरोसो एक ॥
समरथ कोउ न राम सों तीय हरन अपराधु ।
समयहिं साथे काज सब समय सराहिं साधु ॥
तुलसी तीरहु के चलें समय पाइबी थाह ।
धाइज न जाइ थहाइबी सर सरिता अवगाह ॥

होनहारकी प्रबलता

तुलसी जसि भवतव्यता तैसी मिलइ सहाइ ।
आपुनु आवइ ताहि पै ताहि तहाँ लै जाइ ॥

परमार्थप्राप्तिके चार उपाय

कै जूँझिबो कै बूँझिबो दान कि काय कलेस ।
चारि चारु परलोक पथ जथा जोग उपदेस ॥

विवेककी आवश्यकता

पात पात को सीचिबो न करु सरग तरु हेतु ।
कुटिल कटुक फर फैरगो तुलसी करत अचेत ॥

विश्वासकी महिमा

गठिबंध ते परतीति बड़ि जेहिं सबको सब काज ।
कहब थोर समझब बहुत गाड़े बढत अनाज ॥
अपनो ऐपन निज हथा तिय पूजहिं निज भीति ।
फरइ सकल मन कामना तुलसी प्रीति प्रतीति ॥
बरषत करषत आपु जल हरषत अरघनि भानु ।
तुलसी चाहत साधु सुर सब सनेह सनमानु ॥

बारह नक्षत्र व्यापारके लिये अच्छे हैं

श्रुति गुन कर गुन पु जुग मृग हर रेवती सखाउ ।
देहि लेहि धन धरनि धरु गएहुँ न जाइहि काउ ॥

चौदह नक्षत्रोंमें हाथसे गया हुआ धन वापस नहीं मिलता

ऊगुन पूगुन बि अज कृ म आ भ अ मू गुनु साथ ।
हरो धरो गाडो दियो धन फिरि चढ़इ न हाथ ॥

कौन-सी तिथियाँ कब हानिकारक होती हैं ?

रवि हर दिसि गुन रस नयन मुनि प्रथमादिक बार ।
तिथि सब काज नसावनी होइ कुजोग बिचार ॥

कौन-सा चन्द्रमा धातक समझना चाहिये ?

ससि सर नव दुइ छु दस गुन मुनि फल बसु हर भानु ।
मेषादिक क्रम तें गनहिं धात चंद्र जियाँ जानु ॥

किन-किन वस्तुओंका दर्शन शुभ है ?

नकुल सुदरसनु दरसनी छेमकरी चक चाष ।
दस दिसि देखत सगुन सुभ पूजहिं मन अभिलाष ॥

सात वस्तुएँ सदा मङ्गलकारी हैं

सुधा साधु सुरतरु सुमन सुफल सुहावनि बात ।
तुलसी सीतापति भगति सगुन सुमंगल सात ॥

श्रीरघुनाथजीका स्मरण सारे मङ्गलोंकी जड़ है

भरत सत्रुसूदन लखन सहित सुमिरि रघुनाथ ।
करहु काज सुभ साज सब मिलिहि सुमंगल साथ ॥

यात्राके समयका शुभ स्मरण

राम लखन कौसिक सहित सुमिरहु करहु पयान ।

लच्छु लाभ लै जगत जसु मंगल सगुन प्रमान ॥

बेदकी अपार महिमा

अतुलित महिमा बेद की तुलसी किएँ बिचार ।
जो निंदित निंदित भयो बिदित बुद्ध अवतार ॥
बुध किसान सर बेद निज मतें खेत सब सींच ।
तुलसी कृषि लखि जानिबो उत्तम मध्यम नीच ॥

धर्मका परित्याग किसी भी हालतमें नहीं करना चाहिये

सहि कुबोल साँसति सकल अँगइ अनट अपमान ।
तुलसी धरम न परिहरिआ कहि करि गए सुजान ॥

दूसरेका हित ही करना चाहिये, अहित नहीं

अनहित भय परहित किएँ पर अनहित हित हानि ।
तुलसी चारु बिचारु भल करिआ काज सुनि जानि ॥

प्रत्येक कार्यकी सिद्धिमें तीन सहायक होते हैं

पुरुषारथ पूरब करम परमेस्वर परधान ।
तुलसी पैरत सरित ज्यों सबहिं काज अनुमान ॥

नीतिका अवलम्बन और श्रीरामजीके चरणोंमें प्रेम ही श्रेष्ठ है

चलब नीति मग राम पग नेह निबाहब नीक ।
तुलसी पहिरिआ सो बसन जो न पखारें फीक ॥
दोहा चारु बिचारु चलु परिहरि बाद बिबाद ।
सुकृत सीवं स्वारथ अवधि परमारथ मरजाद ॥

विवेकपूर्वक व्यवहार ही उत्तम है

तुलसी सो समरथ सुमति सुकृती साधु सयान ।
जो बिचारि व्यवहरइ जग खरच लाभ अनुमान ॥
जाय जोग जग छेम बिनु तुलसी के हित राखि ।
बिनुइ पराध भृगुपति नहुष बेनु वृकासुर साखि ॥

नेमसे प्रेम बड़ा है

बड़ि प्रतीति गठिबंध तें बड़ो जोग तें छेम ।
बड़ो सुसेवक साइं तें बड़ो नेम तें प्रेम ॥

किस-किसका परित्याग कर देना चाहिये

सिष्य सखा सेवक सचिव सुतिय सिखावन साँच ।

सुनि समुद्दिन पुनि परिहरित पर मन रंजन पाँच ॥

सात वस्तुओंको रस बिगड़नेके पहले ही छोड़ देना चाहिये

नगर नारि भोजन सचिव सेवक सखा अगार ।
सरस परिहरें रंग रस निरस विषाद विकार ॥

मनके चार कण्टक हैं

तूठहिं निज रुचि काज करि रुठहिं काज बिगारि ।
तीय तनय सेवक सखा मन के कंटक चारि ॥

कौन निरादर पाते हैं ?

दीरघ रोगी दारिदी कटुबच लोलुप लोग ।
तुलसी प्रान समान तउ होहिं निरादर जोग ॥

पाँच दुःखदायी होते हैं

पाही खेती लगन बट रिन कुब्याज मग खेत ।
बैर बड़े सों आपने किए पाँच दुख हेत ॥

समर्थ पापीके बैर करना उचित नहीं

धाइ लगै लोहा ललकि खैंचि लेइ नइ नीचु ।
समरथ पापी सों बयर जानि बिसाही मीचु ॥

शोचनीय कौन है

सोचिअ गृही जो मोह बस करइ करम पथ त्याग ।
सोचिअ जती प्रपंच रत बिगत विवेक बिराग ॥

परमार्थसे विमुख ही अंधा है

तुलसी स्वारथ सामुहो परमारथ तन पीठि ।
अंध कहें दुख पाइहै डिठिआरो केहि डीठि ॥

मनुष्य आँख होते हुए भी मृत्युको नहीं देखते

बिन आँखिन की पानहीं पहिचानत लखि पाय ।
चारि नयन के नारि नर सूझत मीचु न माय ॥

मूढ़ उपदेश नहीं सुनते

जौ पै मूढ़ उपदेश के होते जोग जहान ।
क्यों न सुजोधन बोध कै आए स्याम सुजान ॥

सोरठा

फुलइ फरइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद ।
मूरस्व हृदयँ न चेत जौं गुर मिलहिं विरंचि सम ॥

दोहा

रीझि आपनी बूझि पर सीझि बिचार बिहीन ।
ते उपदेस न मानहीं मोह महोदधि मीन ॥

बार-बार सोचनेकी आवश्यकता

अनसमुझें अनुसोचनो अवसि समुद्दिए आपु ।
तुलसी आपु न समुद्दिए पल पल पर परितापु ॥

मूर्खशिरोमणि कौन हैं ?

कूप खनत मंदिर जरत आएँ धारि बबूर ।
बवहिं नवहिं निज काज सिर कुमति सिरोमनि कूर ॥

ईश्वरविमुखकी दुर्गति ही होती है

निडर ईस तें बीस कै बीस बाहु सो होइ ।
गयो गयो कहैं सुमति सब भयो कुमति कह कोइ ॥

जान-बूझकर अनीति करनेवालेको उपदेश देना व्यर्थ हैं

जो सुनि समुद्दि अनीति रत जागत रहे जु सोइ ।
उपदेसिबो जगाइबो तुलसी उचित न होइ ॥
बहु सुत बहु रुचि बहु बचन बहु अचार व्यवहार ।
इनको भलो मनाइबो यह अग्यान अपार ॥

जगत् के लोगोंको रिझानेवाला मूर्ख हैं

लोगनि भलो मनाव जो भलो होन की आस ।
करत गगन को गेंडुँआ सो सठ तुलसीदास ॥
अपजस जोग कि जानकी मनि चोरी की कान्ह ।
तुलसी लोग रिझाइबो करषि कातिबो नान्ह ॥
तुलसी जु पै गुमान को होतो कछू उपाउ ।
तौ कि जानकिहि जानि जियँ परिहरते रघुराउ ॥

प्रतिष्ठा दुःखका मूल है

मागि मधुकरी खात ते सोवत गोड़ पसारि ।
पाप प्रतिष्ठा बढ़ि परी ताते बाढ़ी रारि ॥

तुलसी भेड़ी की धैंसनि जड़ जनता सनमान ।
उपजत ही अभिमान भो खोवत मूढ़ अपान ॥

भेड़ियाधैंसानका उदाहरण

लही आँखि कब आँधरे बाँझ पूत कब ल्याइ ।
कब कोढ़ी काया लही जग बहराइच जाइ ॥

ऐश्वर्य पाकर मनुष्य अपनेको निडर मान बैठते हैं

तुलसी निरभय होत नर सुनिअत सुरपुर जाइ ।
सो गति लखि ब्रत अछृत तनु सुख संपति गति पाइ ॥

तुलसी तोरत तीर तरु बक हित हंस खिडारि ।
विगत नलिन अलि मलिन जल सुरसरिहू बद्धिआरि ॥

अधिकरी बस औसरा भलेउ जानिबे मंद ।
सुधा सदन बसु बारहें चउथें चउथित चंद ॥

नौकर स्वामीकी अपेक्षा अधिक अत्याचारी होते हैं

त्रिविध एक विधि प्रभु अनुग अवसर करहिं कुठाट ।
सूधे टेढ़े सम विषम सब महँ बारहबाट ॥

प्रभु तें प्रभु गन दुखद लखि प्रजहिं सँभारै राउ ।
कर तें होत कृपानको कठिन घोर घन घाउ ॥

ब्यालहु तें बिकराल बड़ ब्यालफेन जियँ जानु ।
वहि के खाए मरत है वहि खाए बिनु प्रानु ॥

कारन तें कारजु कठिन होइ दोसु नहिं मोर ।
कुलिस अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर ॥

काल बिलोकत ईस रुख भानु काल अनुहारि ॥

रविहि राउ राजहिं प्रजा बुध ब्यवहरहिं बिचारि ॥

जथा अमल पावन पवन पाइ कुसंग सुसंग ।
कहिअ कुबास सुबास तिमि काल महीस प्रसंग ॥

भलेहु चलत पथ पोच भय नृप नियोग नय नेम ।
सुतिय सुभूपति भूषिअत लोह सँवारित हेम ॥

राजाको कैसा होना चाहिये ?

माली भानु किसान सम नीति निपुन नरपाल ।
प्रजा भाग बस होहिंगे कबहुँ कबहुँ कलिकाल ॥

बरषत हरषत लोग सब करषत लखै न कोइ ।
तुलसी प्रजा सुभाग ते भूप भानु सो होइ ॥

राजनीति

सुधा सुजान कुजान फल आम असन सम जानि ।
सुप्रभु प्रजा हित लेहिं कर सामादिक अनुमानि ॥

पाके पकए बिटप दल उत्तम मध्यम नीच ।

फल नर लहैं नरेस त्यों करि बिचारि मन बीच ॥

रीझि खीझि गुरु देत सिख सखा सुसाहिब साधु ।
तोरि खाइ फल होइ भल तरु काटें अपराधु ॥

धरनि धेनु चारितु चरत प्रजा सुबच्छु पेन्हाइ ।
हाथ कछू नहिं लागिहै किएँ गोड़ कि गाइ ॥

चढ़े बधूरें चंग ज्यों ग्यान ज्यों सोक समाज ।
करम धरम सुख संपदा त्यों जानिबे कुराज ॥

कांटक करि करि परत गिरि साखा सहस खजूरि ।
मरहिं कृनृप करि करि कुनय सों कुचालि भव भूरि ॥

काल तोपची तुपक महि दारु अनय कराल ।
पाप पलीता कठिन गुरु गोला पुहुमी पाल ॥

किसका राज्य अचल हो जाता है ?

भूमि रुचिर रावन सभा अंगद पद महिपाल ।
धरम राम नय सीय बल अचल होत सुभ काल ॥

प्रीति राम पद नीति रति धरम प्रतीति सुभायँ ।
प्रभुहि न प्रभुता परिहरै कबहुँ बचन मन कायँ ॥

कर के कर मन के मनहिं बचन बचन गुन जानि ।
भूपहि भूलि न परिहरै बिजय विभूति सयानि ॥

गोली बान सुमंत्र सर समुझि उलटि मन देखु ।
उत्तम मध्यम नीच प्रभु बचन बिचारि बिसेषु ॥

सत्रु सयानो सतिल ज्यों राख सीस रिपु नाव ।
बूड़त लखि पग डगत लखि चपरि चहुँ दिसि घाव ॥

ऐअत राज समाज घर तन धन धरम सुबाहु ।
सांत सुसचिवन सौपि सुख बिलसइ नित नरनाहु ॥

मुखिआ मुखु सो चाहिए खान पान कहुँ एक ।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित विबेक ॥

सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिबु होइ ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकबि सराहहिं सोइ ॥

सचिव बैद गुर तीनि जौ प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तन तीनी कर होइ बेगिहीं नास ॥

रसना मन्त्री दसन जन तोष पोष निज काज ।
प्रभु कर सेन पदादिका बालक राज समाज ॥

लकड़ी डौआ करद्धुली सरस काज अनुहारि ।
सुप्रभु संग्रहहिं परिहरहिं सेवक सखा बिचारि ॥

प्रभु समीप छोटे बड़े रहत निबल बलवान ।
तुलसी प्रगट बिलोकिए कर अँगुली अनुमान ॥

आज्ञाकारी सेवक स्वामी से बड़ा होता है

साहब तें सेवक बड़ो जो निज धरम सुजान ।
राम बाँधि उतरे उदधि लाँधि गए हनुमान ॥

मूलके अनुसार बढ़नेवाला और बिना अभिमान किये

सबको सुख देनेवाला पुरुष ही श्रेष्ठ है

तुलसी भल बरतरु बढ़त निज मूलहिं अनुकूल ।
सबहि भाँति सब कहूँ सुखद दलनि फलनि बिनु फूल ॥

त्रिभुवनके दीप कौन है ?

सधन सगुन सधरम सगन सबल सुसाइँ महीप ।
तुलसी जे अभिमान बिनु ते तिभुवन के दीप ॥

कीर्ति करतूतिसे ही होती है

तुलसी निज करतूति बिनु मुकुत जात जब कोइ ।
गयो अजामिल लोक हरि नाम सक्यो नहिं धोइ ॥

बड़ो का आश्रय भी मनुष्यको बड़ा बना देता है

बड़ो गहे ते होत बड़े ज्यों बावन कर दंड ।
श्रीप्रभु के सँग सों बढ़ो गयो अखिल ब्रह्मण्ड ॥

कपटी दानीकी दुर्गति

तुलसी दान जो देत हैं जल में हाथ उठाइ ।
प्रतिग्राही जीवै नहीं दाता नरकै जाइ ॥

अपने लोगोंके छोड़ देनेपर सभी वैरी हो जाते हैं

आपन छोड़ो साथ जब ता दिन हितू न कोइ ।
तुलसी अंबुज अंबु बिनु तरनि तासु रिपु होइ ॥

साधनसे मनुष्य ऊपर उठता है और साधन बिना गिर जाता है

उरबी परि कलहीन होइ ऊपर कलाप्रधान ।
तुलसी देखु कलाप गति साधन घन पहिचान ॥

सज्जनोंको दुष्टोंका संग भी मङ्गलदायक होता है

तुलसी संगति पोच की सुजनहि होति म-दानि ।
ज्यों हरि रूप सुताहि ते कीनि गोहारि आनि ॥

कलियुगमें कुटिलताकी वृद्धि

कलि कुचालि सुभ मति हरनि सरलै दडै चक ।
तुलसी यह निहचय भई बाड़ि लेति नव बक ॥

आपसमें मेल रखना उत्तम है

गो खग से खग बारि खग तीनों माहिं बिसेक ।
तुलसी पीवैं फिरि चलैं रहैं फिरै सँग एक ॥

सब समय समतामे स्थित रहनेवाले पुरुष ही श्रेष्ठ हैं

साधन समय सुसिद्धि लहि उभय मूल अनुकूल ।
तुलसी तीनिति समय सम ते महि मंगल मूल ॥

जीवन किनका सफल है ?

मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिर धरि करहिं सुभायँ ।
लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर नतरु जनमु जग जायँ ॥

पिताकी आज्ञाका पालन सुखका मूल है

अनुचित उचित विचारु तजि जे पालहिं पितु बैन ।
ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति ऐन ॥

स्त्रीके लिये पतिसेवा ही कल्याणदायिनी है

सोरठा

सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ ।
जसु गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय ॥

शरणागतका त्याग पापका मूल है

दोहा

सरनागत कहुँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पावर पापमय तिन्हहिं बिलोकत हानि ॥
तुलसी तून जलकूल को निरबल निपट निकाज ।
कै राखे कै सँग चलै बाँह गहे की लाज ॥

कलियुगका वर्णन

रामायन अनुहरत सिख जग भयो भारत रीति ।
तुलसी सठ की को सुनै कलि कुचालि पर प्रीति ॥

पात पात कै सीचिबो बरी बरी कै लोन ।
 तुलसी खोटें चतुरपन कलि डहके कहु को न ॥
 प्रीति सगाई सकल बिधि बनिज उपाय अनेक ।
 कल बल छल कलि मल मलिन डहकत एकहि एक ॥
 दंभ सहित कलि धरम सब छल समेत व्यवहार ।
 स्वारथ सहित सनेह सब रुचि अनुहरत अचार ॥
 चोर चतुर बटमार नट प्रभु प्रिय भँडुआ भंड ।
 सब भच्छक परमारथी कलि सुपंथ पाषंड ॥
 असुभ बेष भूषन धरें भच्छाभच्छ जे खाही ।
 तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलिजुग माहिं ॥

सोरठा

जे अपकारी चार तिन्ह कर गैरव मान्य तेइ ।
 मन क्रम बचन लबार ते बकता कलिकाल महुँ ॥

दोहा

ब्रह्मग्यान बिनु नारि नर कहहिं न दूसरि बात ।
 कौड़ी लागि लोभ बस करहिं बिप्र गुर धात ॥
 बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह ते कछु धाट ।
 जानइ ब्रह्म सो बिप्रबर आँखि देखावहिं डाट ॥
 साखी सबदी दोहरा कहि कहनी उपस्थान ।
 भगति निरूपहिं भगत कलि निंदहिं वेद पुरान ॥
 श्रुति संमत हरिभगति पथ संजुत विरति बिवेक ।
 तेहि परिहरिहिं बिमोह बस कल्पहिं पंथ अनेक ॥
 सकल धरम विपरीत कलि कल्पित कोटि कुपंथ ।
 पुन्य पराय पहार बन दुरे पुरान सुग्रन्थ ॥
 धातुबाद निरुपाधि बर सद्गुरु लाभ सुमीत ।
 देव दरस कलिकाल में पौथिन दुरे सभीत ॥
 सुर सदननि तीरथ पुरिन निपट कुचालि कुसाज ।
 मनहुँ मवा से मारि कलि राजत सहित समाज ॥
 गोँड़ गवाँर नृपाल महि जमन महा महिपाल ।
 साम न दान न भेद कलि केवल दंड कराल ॥
 फोरहिं सिल लोद्धा सदन लागें अदुक पहार ।
 कायर कूर कुपूत कलि घष घर सहस डहार ॥
 प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान ।
 जेन केन बिधि दीन्हे दान करइ कल्यान ॥
 कलिजुग सम जुग आन नहिं जौ नर कर बिस्वास ।
 गाइ राम गुन गन बिमल भव तर बिनहिं प्रयास ॥

और चाहे जो भी घट जाय,
 भगवान् से प्रेम नहीं घटना चाहिये

श्रवन घटहुँ पुनि दृग घटहुँ घटउ सकल बल देह ।
 इते घटें घटिहै कहा जौ न घटै हरिनेह ॥

कुसमयका प्रभाव

तुलसी पावस के समय धरी कोकिलन मौन ।
 अब तो दादुर बोलिहैं हमें पूछिहै कौन ॥

श्रीरामजीके गुणोंकी महिमा

कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाषंड ।
 दहन राम गुन ग्राम जिमि ईंधन अनल प्रचंड ॥

कलियुगमें दो ही आधार है

सोरठा

कलि पाषंड प्रचार प्रबल पाप पावँर पतित ।
 तुलसी उभय अधार राम नाम सुरसरि सलिल ॥

भगवत्प्रेम ही सब मङ्गलोंकी खान है

दोहा

रामचंद्र मुख चंद्रमा चित चकोर जब होइ ।
 राम राज सब काज सुभ समय सुहावन सोइ ॥
 बीज राम गुन गन नयन जल अंकुर पुलकालि ।
 सुकृती सुतन सुखेत बर बिलसत तुलसी सालि ॥
 तुलसी सहित सनेह नित सुमिरहु सीता राम ।
 सगुन सुमंगल सुभ सदा आदि मध्य परिनाम ॥
 पुरुषारथ स्वारथ सकल परमारथ परिनाम ।
 सुलभ सिद्धि सब साहिबी सुमिरत सीता राम ॥

दोहावलीके दोहोंकी महिमा

मनिमय दोहा दीप जहै उर घर प्रगट प्रकास ।
 तहै न मोह तम भय तमी कलि कज्जली बिलास ॥
 का भाषा का संसकृत प्रेम चाहिए साँच ।
 काम जु आवै कामरी का लै करिअ कुमाच ॥

रामकी दीनबन्धुता

मनि मानिक महँगे किए सहँगे तृन जल नाज ।
 तुलसी एते जानिए राम गरीब नेवाज ॥

॥ इति ॥

The texts by Goswami Tulasidas were encoded in ISCII by a group of volunteers at Ratlam. The files were converted to ITRANS 5.21 encoding for creating this version.

Please contact the following for additional details:

Vineet Chaitanya
vc@iiit.net
<http://www.iiit.net>

Avinash Chopde
avinash@acm.org
<http://www.aczone.com/>

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

Last updated October 27, 2000